गाने के साथ-साथ बदलती प्रजाति

जिस तरह हम शास्त्रीय संगीत से लेकर पार्श्व गायन तक पहुंचे हैं उसी तरह चिड़ियाओं के गाने का तरीका भी बदला है, लेकिन चिड़ियाओं में यह बदलाव उनके प्रजनन में अवरोध उत्पन्न करता है और इससे छोटी-सी अवधि में ही एक नई प्रजाति निर्मित हो सकती है।

इसका कारण यह है कि कुछ पक्षियों में प्रजनन के लिए साथी की पहचान गीत द्वारा होती है। यदि किसी पक्षी का गीत बदल जाए तो उसकी प्रजाति के अन्य पक्षी उसे नहीं पहचान पाते।

इस प्रकार के व्यवहार को समझने के लिए परिस्थिति वैज्ञानिकों के पास एक बड़ी जानकारी उपलब्ध है। देखा गया है कि सांगबर्ड (गाने वाले पक्षी) अपनी स्थानीय गायन शैली बना लेते हैं। और उनकी अपनी गायन शैली के प्रति प्रतिक्रिया बहुत सशक्त होती है बजाय दूसरे क्षेत्र की चिड़ियाओं के, जबकि वे उन्हीं की प्रजाति की होती हैं। यह प्रक्रिया कैसे होती है और कितनी जल्दी ये भिन्नता उत्पन्न होती है, इसका पता एक अध्ययन से चलता है। यह अध्ययन डरहम स्थित ड्यूक यूनिवर्सिटी की परिस्थिति वैज्ञानिक एलिज़ाबेथ डेरीबेरी ने किया है।

डेरीबेरी का कहना है कि 1979 से लेकर 2003 तक उन्होंने सफेद ताज वाले नर गोरैया का गाना रिकार्ड किया। उन्होंने पाया कि नया गाना धीमी गति का है और सुर नीचा है। जब इन पक्षियों द्वारा गाया जाने वाला नया गीत इनके सामने बजाया गया तो इसे सुनकर मादा पक्षी तो समागम के लिए ज़्यादा तैयार हुईं और नर पक्षी इसे सुनकर अपने इलाके की रक्षा करने की तैयारी में जुट गए। दूसरी ओर पुरानी शैली का गीत बजाने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

इन परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि गानों की शैली में परिवर्तन कुछ ही सालों में हो जाता है और यही अवरोध नवीन प्रजाति निर्माण का कारण बनता है। यानी साथी पहचान प्रणाली में परिवर्तन काफी तेज़ी से हो सकता है और एक प्रजाति दो में बंट सकती है। ***(स्रोत फीचर्स)***